षष्ठ अध्याय

"अलका सरावगी के उपन्यास : भाषाशैली एवं उद्देश्य सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन"

षष्ठ अध्याय

''अलका सरावगी के उपन्यास : भाषाशैली एवं उद्देश्य-सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन''

6.1 भाषाशैली का कलात्मक मूल्यांकन :

भाषा मूलत: विचारों के आदान-प्रदान का साधन है। भाषा और शैली एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। वस्तुत: मनुष्य सभी प्राणियों से विकसित है। साथ ही उसमें विचार-चिंतन-मनन की वृत्ति नजर आती है। इसके अलावा मनुष्य को और एक वरदान मिला है और वह है 'भाषा'। भाषा वही श्रेष्ठ होती है जिसके पास भावों तथा विचारों को अभिव्यक्त करने की ताकत होती है। वही ताकत भाषा के शब्दों में होती है। शामचन्द्र कपुर के शब्दों में - ''भाषा वह शब्दमय माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर या लिखकर अपने विचार दूसरों पर सरलता, स्पष्टता, विचार तथा पूर्णता से व्यक्त कर सकता है।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि मनुष्य शब्दों के माध्यम से ही अपने विचार सरलता तथा स्पष्टता से दूसरों के सामने व्यक्त करता है। जब इस शब्द को भाषा के सहारे वाणी मिलती है तब उसमें एक शैली भी प्रयुक्त होती है।

शैली और भाषा का अटूट संबंध होता है। भाषा और शैली के गहरे संबंध के बारे में श्यामसुंदर दास जी ठीक ही लिखते हैं - ''भाषा ऐसे सार्थक शब्द-समुहों का नाम है जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात दूसरों के मन तक पहुँचाने और उसके द्वारा उसे प्रभावित करने में समर्थ होते हैं। अतएव भाषा का मूल आधार शब्द है जिन्हें उपयुक्त रीति से प्रयुक्त करने के कौशल को ही शैली का मूल तत्व समझना चाहिए।''[2] अर्थात् किसी लेखक या कवि की शब्दयोजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट, उसकी ध्वनि आदि का नाम शैली है। अत: कहना आवश्यक नहीं कि भाषा की इमारत शब्दों के बूते पर खड़ी होकर विचारों का आदान-प्रदान करती है। साथ ही विशिष्ट शैली में भी

---

1. शामचन्द्र कपूर - व्यावहारिक हिंदी व्याकरण, पृष्ठ - 12
2. शामसुंदर दास - साहित्यालोचन, पृष्ठ - 193

प्रयुक्त होती है। अलका सरावगी के उपन्यासों की भाषा में वैविध्य नजर आता है। अध्ययन की सुविधा के लिए भाषा शैली को तीन भागों में विभाजित किया है, जैसे -

1. विविध शब्दों का प्रयोग
2. वैविध्यपूर्ण भाषा का प्रयोग
3. विविध शैलियों का प्रयोग

6.1.1 विविध शब्दों का प्रयोग -

अलका सरावगी के उपन्यासों में भाषा के विविध शब्दों का प्रयोग मिलता है, जैसे - संस्कृत शब्द, अँग्रेजी शब्द, अरबी शब्द और फारसी शब्द आदि। अब हम उनके उपर्युक्त शब्दों पर विचार-विमर्श करेंगे -

6.1.1.1 संस्कृत शब्द :-

अतीत का गौरवगान करनेवाले यह शब्द अलका सरावगी के उपन्यासों में पात्रानुरूप तथा प्रसंगानुरूप मिलते हैं, जैसे - 'संज्ञा'[1], 'विशाल'[2], 'रहस्य'[3], 'संप्रदाय'[4], 'प्रवाह'[5], 'कृतज्ञता'[6], 'आत्मविश्वास'[7], 'सौहार्द'[8], 'आक्रमण'[9], 'तत् सवितु: वरेण्यं'[10], 'स्थापना'[11], 'कादम्बरी'[12], 'आशीर्वाद'[13], 'निशान'[14], 'महात्मा'[15], 'सामाजिक'[16], 'प्राणी'[17], 'अभिजात्य'[18], 'आदेश'[19], 'प्राणान्तक'[20], 'गर्भ'[21], 'मोक्ष'[22], 'अग्नि'[23], 'प्रतीक्षा'[24], 'प्रतिबिंब'[25], 'अकाल'[26] और 'अभिशप्त'[27] आदि। सारांश रूप में कहा जा सकता है कि संस्कृत शब्दों के कारण विवेच्य उपन्यासों की भाषा में स्वाभाविकता तथा कलात्मकता दिखाई देती है।

---

1. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 7
2. वही, पृष्ठ - 32
3. वही, पृष्ठ - 37
4. वही, पृष्ठ - 124
5. वही, पृष्ठ - 135
6. वही, पृष्ठ - 150
7. वही, पृष्ठ - 183
8. वही, पृष्ठ - 196
9. वही, पृष्ठ - 207
10. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 6
11. वही, पृष्ठ - 19
12. वही, पृष्ठ - 34
13. वही, पृष्ठ - 43
14. वही, पृष्ठ - 74
15. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 97
16. वही, पृष्ठ - 107
17. वही, पृष्ठ - 126
18. वही, पृष्ठ - 150
19. वही, पृष्ठ - 171
20. वही, पृष्ठ - 179
21. अलका सरावगी-कोई बात नही,पृष्ठ-49
22. वही, पृष्ठ - 62
23. वही, पृष्ठ - 103
24. वही, पृष्ठ - 135
25. वही, पृष्ठ - 149
26. वही, पृष्ठ - 163
27. वही, पृष्ठ - 186

6.1.1.2 अँग्रेजी शब्द :-

वस्तुत: हमारे देश पर अँग्रेजों का राज लगभग डेढ़ सौ साल होने के कारण रचनाकारों पर भी उसका प्रभाव दिखाई देता है। फलत: उनकी रचनाओं में भी अँग्रेजी वाक्यों तथा शब्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। अलका सरावगी के उपन्यासों में अँग्रेजी वाक्यों तथा शब्दों की भरमार दिखाई देती है। यहाँ सिर्फ चुनिंदा वाक्यों को ही प्रस्तुत किया जा रहा है -

''आई एम द मोनार्क ऑफ ऑल आई सर्वे''[1], ''माई डियर। नाइन्टीन हान्डरेड एंड फोर्टी !''[2], ''वाय आर यू हिटिंग हिम''[3], ''आफ्टर ट्वेंटी ईयर्स''[4], ''एमिल बर्न्स की वॉट इज मार्क्सिज्म''[5], ''इट विल गो अप योर हेड''[6], ''हैस अ गुड़ पर्सनैलिटी विद हिज फ्रेंच दाढ़ी''[7], ''इट्स गुड़ टु सी, दैट यू हैव मेड अ सक्सेज ऑफ योर लाइफ''[8], ''नथिंग आइ एवर डिड, बाज राइट''[9], ''इट वॉज अनफोरचुनेट''[10], ''हाऊ विल आई नो, अंटिल यू टेल मी?''[11], ''रिच बीमेंस क्लब''[12], ''यू फील गिल्टी ऑल द टाइम''[13], ''राइट अवे मैडम, राइट अवे''[14], ''आइ कुड़ किल हिम''[15], ''इंडिया इज माइ कन्ट्री''[16], ''ही-ट्रीट्स-मी-एज-इक्वल''[17], ''वाय इजन्ट ही लीव मी अलोन''[18], ''आई हैव नथिंग टू टेल यू''[19], ''गुड़, यू लुक एब्सोल्यूटली फाइन''[20], ''टू हेल विद योर आइडियाज''[21] और ''आर यू अशेम्ड ऑफ मी?''[22] आदि।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि अलका सरावगी के उपन्यासों में अंग्रेजी वाक्यों तथा शब्दों की भरमार नजर आती है। इन शब्दों के कारण भाषा में सहजता, सफलता, स्वाभाविकता तथा कलात्मकता दिखाई देती है। अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते समय पात्र बिल्कुल सहजता के साथ प्रस्तुत होते हैं।

---

1. अलका सरावगी-कलि-कथा:वाया बाईपास, पृष्ठ-10
2. वही, पृष्ठ - 17
3. वही, पृष्ठ - 55
4. वही, पृष्ठ - 90
5. वही, पृष्ठ - 113
6. वही, पृष्ठ - 183
7. वही, पृष्ठ - 183
8. वही, पृष्ठ - 188
9. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 75
10. वही, पृष्ठ - 77
11. वही, पृष्ठ - 134
12. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 140
13. वही, पृष्ठ - 148
14. वही, पृष्ठ - 170
15. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 12
16. वही, पृष्ठ - 12
17. वही, पृष्ठ - 29
18. वही, पृष्ठ - 90
19. वही, पृष्ठ - 127
20. वही, पृष्ठ - 157
21. वही, पृष्ठ - 168
22. वही, पृष्ठ - 219

6.1.1.3 अरबी शब्द :-

अलका सरावगी के उपन्यासों में अरबी शब्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। ये शब्द उपन्यास में अनायास ही घुल-मिल गए हैं। विवेच्य उपन्यासों में प्रयुक्त शब्द के उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है - 'नजाकत'[1], 'नतीजा'[2], 'बिल्कुल'[3], 'इम्तिहान'[4], 'ख़ारिज'[5], 'खिलाफ'[6], 'मकसद'[7], 'गुलाम'[8], 'शैतान'[9], 'हिम्मत'[10], 'कागज'[11], 'वजह'[12], 'जिक्र'[13], 'अफीम'[14], 'तस्वीर'[15], 'उम्र'[16], 'फुरसत'[17], 'सुबह'[18], 'हालत'[19], 'खब्ती'[20], 'मुआयना'[21], 'रिक्शा'[22], 'सवाल'[23], 'गजब'[24], 'नकल'[25], 'दिमाग'[26], 'अखबार'[27], 'हिदायत'[28] और 'इजाजत'[29] आदि। कहना आवश्यक नहीं कि उक्त शब्दों का संबंध हमारे दैनिक क्रियाकलापों के साथ दृष्टिगोचर होता है। यही कारण है कि वे शब्द विवेच्य उपन्यासों में अनायास ही प्रयुक्त हुए हैं, जिसके कारण उपन्यास कलात्मकता की कसौटी पर सही रूप में उतरता है। अत: कहना गलत नहीं कि अरबी भाषा का लेखिका पर प्रभाव है।

---

1. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 8
2. वही, पृष्ठ - 20
3. वही, पृष्ठ - 24
4. वही, पृष्ठ - 54
5. वही, पृष्ठ - 97
6. वही, पृष्ठ - 118
7. वही, पृष्ठ - 137
8. वही, पृष्ठ - 163
9. वही, पृष्ठ - 186
10. वही, पृष्ठ - 200
11. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 5
12. वही, पृष्ठ - 11
13. वही, पृष्ठ - 35
14. वही, पृष्ठ - 48
15. वही, पृष्ठ - 77
16. वही, पृष्ठ - 125
17. वही, पृष्ठ - 151
18. वही, पृष्ठ - 164
19. वही, पृष्ठ - 190
20. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 21
21. वही, पृष्ठ - 43
22. वही, पृष्ठ - 104
23. वही, पृष्ठ - 124
24. वही, पृष्ठ - 135
25. वही, पृष्ठ - 139
26. वही, पृष्ठ - 152
27. वही, पृष्ठ - 176
28. वही, पृष्ठ - 180
29. वही, पृष्ठ - 212

6.1.1.4 फारसी शब्द :-

विवेच्य उपन्यासों में संस्कृत, अँग्रेजी, अरबी शब्द के साथ-साथ फारसी शब्द भी अधिकांश मात्रा में मिलते हैं। सरावगी जी के उपन्यासों में प्रयुक्त फारसी शब्द यहाँ द्रष्टव्य है - 'गर्दन'[1], 'पाबंध'[2], 'चरख़ा'[3], 'नाराज'[4], 'दरबान'[5], 'परेशान'[6], 'मासूमियत'[7], 'मजबूरी'[8], 'दरवाजा'[9], 'जच्चा'[10], 'उम्मीद'[11], 'लाश'[12], 'शादी'[13], 'फरमाइश'[14], 'गुनाह'[15], 'बाजार'[16], 'अंदाज'[17], 'खयाल'[18], 'आशियाना'[19], 'आख़िर'[20], 'पेशाब'[21], 'चश्मा'[22], 'वकीलनुमा'[23], 'शरम'[24], 'अफसोस'[25], 'आवाज'[26], 'खाक'[27], 'सब्जी'[28] और 'अतिशबाजी'[29] आदि। सार यह कि अलका सरावगी के उपन्यासों में फारसी शब्दों का प्रयोग सहजता तथा कलात्मकता से परिलक्षित होता है।

अंतत: कहा जा सकता है कि अलका सरावगी के उपन्यासों में संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी तथा फारसी शब्दों का प्रयोग अधिकांश मात्रा में मिलता है। इन शब्दों के कारण विवेच्य उपन्यासों में स्वाभाविकता, सरलता, सहजता, सफलता और कलात्मकता आदि प्रवृत्तियाँ परिलक्षित होती है। पात्रों पर तत्कालीन परिवेश एवं समाज का प्रभाव लक्षित होता है। पात्रों के द्वारा प्रयुक्त शब्द चाहे वे संस्कृत, अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी के हो वे उनके व्यवहार से जुड़ हुए लगते हैं।

---

1. अलका सरावगी-कलि-कथा:वाया बाईपास, पृष्ठ-20
2. वही, पृष्ठ - 92
3. वही, पृष्ठ - 96
4. वही, पृष्ठ - 102
5. वही, पृष्ठ - 107
6. वही, पृष्ठ - 109
7. वही, पृष्ठ - 141
8. वही, पृष्ठ - 155
9. वही, पृष्ठ - 167
10. वही, पृष्ठ - 212
11. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 5
12. वही, पृष्ठ - 40
13. वही, पृष्ठ - 55
14. वही, पृष्ठ - 63
15. वही, पृष्ठ - 120
16. वही, पृष्ठ - 149
17. वही, पृष्ठ - 166
18. वही, पृष्ठ - 169
19. वही, पृष्ठ - 174
20. वही, पृष्ठ - 191
21. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 32
22. वही, पृष्ठ - 107
23. वही, पृष्ठ - 114
24. वही, पृष्ठ - 121
25. वही, पृष्ठ - 127
26. वही, पृष्ठ - 136
27. वही, पृष्ठ - 166
28. वही, पृष्ठ - 168
29. वही, पृष्ठ - 210

6.1.2 वैविध्यपूर्ण भाषा का प्रयोग -

अलका सरावगी के उपन्यासों में भाषा के विभिन्न प्रयोग दिखाई देते हैं, जैसे - कहावतें, मुहावरे, लोकगीत, गालियों से युक्त भाषा का प्रयोग, प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग तथा साहित्यिक काव्यपंक्तियों का प्रयोग आदि। अब हम उनके विविध भाषा प्रयोगों पर, विचार-विमर्श करेंगे -

6.1.2.1 कहावतें :-

कहावतों को लोकोक्तियाँ भी कहा जाता है। रचनाओं में कहावतों का वह स्थान है जो शरीर पर गहनों का। कहावतों के कारण भाषा में सूक्ष्मता, प्रभावकारिता, सप्राणता, सारगर्भितता तथा लोकप्रियता आती है। साथ ही अनुभव, व्यवहार, विश्वास, उपदेश तथा ज्ञान आदि बातों की वृद्धि होती है। परिणामत: भाषा में तीव्रता, प्रेषणीयता तथा मार्मिकता की सृष्टि दिखाई देती है। अमी आधार 'निडर' के शब्दों में - "सरलता, संक्षिप्तता, सारगर्भितता, सप्राणता, लोकप्रियता, मानवीय अनुभव एवं उनकी सत्यता आदि लोकोक्तियों की विशेषताएँ हैं। लोकोक्तियाँ समाज-नीति, धर्म, अनुभव, व्यवहार, शिक्षा, उपदेश, विश्वास, रीति, ज्ञान आदि से संचलित रहती हैं। इनके दूवारा भाषा में तीव्रता प्रेषणीयता, चमत्कार एवं मार्मिकता की सृष्टि होती है। लोकोक्ति स्वत: प्रसूत होती है और सरस तथा संक्षिप्त रूप में अभिव्यक्त होती है।"[1] कहना आवश्यक नहीं कि लोकोक्तियाँ या कहावतें भाषा को मार्मिक, सारगर्भित तथा सरल बनाती है। साथ ही जीवनानुभूति, गहन-चिंतन एवं सूक्ष्म निरीक्षण को भी प्रस्तुत करती है जिसके कारण भाषा में स्वाभाविकता आती है।

अलका सरावगी के उपन्यासों में भी कहावतों के प्रयोग भाषा में स्वाभाविकता से हुआ है। उनके उपन्यासों में कहावतों का प्रयोग अधिकांश मात्रा में मिलता है, जैसे -

"रुपयो होवे रोकड़ो, सोरो आवै सांस। संपत होय तो घर भलो, नहीं भलो परदेस"[2], "चांदी बरगे (जैसे) भात, सोने बरगी दाल, गिलौरी बरगे फलके (रोटी)। कलकत्ता सै जाना तो इस जहान सै जाना सै जी।"[3], "क्या तुमने इस घर को हरि घोष का गोला (गोदाम) समझ रखा है, जो मांगने चले आए; रूपए की जरूरत हो भाई, तो किसी गौरी सेन के

---

1. अमी आधार 'निडर' - समाचार संकल्पना एवं अनुवाद, पृष्ठ - 117
2. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 30
3. वही, पृष्ठ - 36

पास जाओ।"[1], "मोर नाचता है, पर अपने पैरों को देखकर रो पड़ता है।"[2], "दाल में जरूर कुछ काला है।"[3], "सुखिया सब संसार है, खावे और सोवे। दुखिया दास कबीर है, जागे और रोवे।"[4], "खून पानी से गाढ़ा होता है।"[5], "जूता गाँठने से चंड़ी पाठ"[6], "मूल धन से ब्याज प्यारा होता है।"[7], "पहला सुख निरोगी काया। दूजा सुख घर में माया।"[8], "अटकने का खतरा कम, प्लस बात में ज्यादा दम।"[9] आदि कहावतों का प्रयोग लेखिका अलका सरावगी के उपन्यासों में दिखाई देता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में कहावतों का प्रयोग यथावश्यक व प्रसंगानुरूप किया है। इस तथ्य को भी स्वीकार किया जा सकता है कि अपनी विभिन्न रचनाओं में कहावतों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग करते समय लेखिका ने इस बात पर अवश्य ध्यान दिया है कि जिसमें रचनाओं की भाषा प्रभावशाली बने, न कि निरस तथा उबाऊ। इन कहावतों के सहारे विवेच्य उपन्यासों की कलात्मकता प्रतीत होती है।

6.1.2.2 मुहावरे :-

'मुहावरा' यह अरबी शब्द है। भाषा में होनेवाले वाक्य-विन्यास को सशक्त एवं गतिशील बनाने का काम मुहावरे करते हैं। मुहावरे साहित्य-कृति में गागर में सागर भर देते हैं। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में प्रांजलता, प्रवाहमानता तथा अभिव्यक्ति की वृद्धि होती है। मुहावरे भाषा के अर्थ को विलक्षण तथा वैचित्र्यपूर्ण बनाते हैं। साथ ही वे भाषा के लिए संजीवनी का रूप देते हुए वाक्य का अंग बन जाते हैं। अमी आधार 'निडर' की मान्यता है - "मुहावरा उन वाक्यांश या खंड खंड वाक्य को कहते हैं जिनका अर्थ उस भाषा में साधारण या सीधा न होकर विलक्षण या वैचित्र्यपूर्ण हो। मुहावरा भाषा का विशिष्ट प्रयोग है जिसे लाक्षणिक प्रयोग कहा जाता है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में कसावट, चमत्कारिकता, विलक्षणता आती है। मुहावरा भाषा के लिए संजीवनी रूप होता है। मुहावरा पदबंध होता है अत: स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त नहीं होता। मुहावरे की सार्थकता किसी वाक्य का अंग बन जाने में होती है।"[10] स्पष्ट है कि मुहावरे भाषा को विलक्षण तथा विशिष्ट अर्थ देते हैं। मुहावरे के कारण भाषा में कसावट, चमत्कारिकता तथा विलक्षणता आती है। साथ ही मुहावरों की सार्थकता वाक्य का अंग बन जाने में होती है।

---

1. अलका सरावगी-कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 99
2. वही, पृष्ठ - 96
3. वही, पृष्ठ - 172
4. वही, पृष्ठ - 206
5. अलका सरावगी-शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 21
6. अलका सरावगी-शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 24
7. वही, पृष्ठ - 168
8. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 12
9. वही, पृष्ठ - 53
10. अमी आधार 'निडर' - समाचार संकल्पना एवं अनुवाद, पृष्ठ - 110-111

अलका सरावगी के उपन्यासों में मुहावरों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है। उनके उपन्यासों में प्रयुक्त मुहावरे इस प्रकार हैं - 'तह तक पहुँचना'[1], 'फक पड़ जाना'[2], 'पैरों तले धरती खिसकना'[3], 'हक्का बक्का रह जाना'[4], 'गड़े मुर्दे उखाड़ना'[5], 'खून पानी करना'[6], 'टस-से-मस न होना'[7], 'मुँह बिचकना'[8], 'दंग रह जाना'[9], 'आपे से बाहर हो जाना'[10], 'रोंगटे खड़े हो जाना'[11], 'हतप्रभ रह जाना'[12], 'रसातल जाना'[13], 'आँख मूँदना'[14], 'धाक जमाना'[15], 'लंबी सास लेना'[16], 'छक्के छुड़ाना'[17], 'छाती पर साँप लोटना'[18], 'दंग रह जाना'[19], 'पनाह देना'[20], 'गम खाना'[21], 'जी में जी आना'[22], 'हामीं भरना'[23], 'गुम सुम रहना'[24], 'लोट-पोट हो जाना'[25], 'गुस्सा उफनना'[26], 'साँप सूँघ जाना'[27], 'तरस खाना'[28] और 'तिल-मिला उठना'[29] आदि।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि अलका सरावगी के उपन्यासों में मुहावरों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। मुहावरों का यथोचित प्रयोग कर लेखिका ने अपने भाषा सौंदर्य को गरिमा प्रदान की है। मुहावरों के प्रयोग के कारण उनकी भाषा भी कलात्मक प्रतीत होती है।

---

1. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 40
2. वही, पृष्ठ - 68
3. वही, पृष्ठ - 211
4. वही, पृष्ठ - 157
5. वही, पृष्ठ - 187
6. वही, पृष्ठ - 199
7. वही, पृष्ठ - 202
8. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 16
9. वही, पृष्ठ - 18
10. वही, पृष्ठ - 38
11. वही, पृष्ठ - 49
12. वही, पृष्ठ - 50
13. वही, पृष्ठ - 91
14. वही, पृष्ठ - 96
15. वही, पृष्ठ - 96
16. वही, पृष्ठ - 96
17. वही, पृष्ठ - 133
18. वही, पृष्ठ - 133
19. वही, पृष्ठ - 147
20. वही, पृष्ठ - 169
21. वही, पृष्ठ - 182
22. वही, पृष्ठ - 192
23. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 72
24. वही, पृष्ठ - 84
25. वही, पृष्ठ - 88
26. वही, पृष्ठ - 97
27. वही, पृष्ठ - 139
28. वही, पृष्ठ - 151
29. वही, पृष्ठ - 176

6.1.2.3 लोकगीत :-

वस्तुत: लोकगीत विशिष्ट प्रदेश या अंचल की देन होते हैं। साथ ही ये गीत समुह से गाँवों या देहातों में गाएँ जाते हैं। नवल जी ने 'नालंदा विशाल शब्दसागर' में लोकगीत का अर्थ इस प्रकार दिया है - "गांव, दहातों में गाये जानेवाले जनसाधारण के गीत।"[1] कहना आवश्यक नहीं कि लोकगीत गाँवों तथा देहातों के जनसाधारण लोगों की देन हैं। ये लोकगीत श्रम, पीड़ा, कष्ट, दु:ख, निराशा, वेदना, समस्या तथा कठिनाइयों को भूलकर, परंपरा से व्यक्ति या समाज की मानसिकता तथा मनोरंजन की भूख मिटाते हैं। लोकगीत देश की सांस्कृतिक एकता का सशक्त माध्यम है। निष्कर्ष यह कि लोकगीत मानव हृदय की विविध अनुभूतियों की ग्येय अभिव्यक्ति है। अलका सरावगी के 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में लोकगीतों का उचित जगह निर्वाह हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास के किशोरबाबू की कथा का प्रारंभ ग्रेट ग्रैंड फादर रामविलासबाबू के बचपन की यादों से शुरू होती है तब उन्हें याद आता है - रामविलास, डूंगर, नरसिंह और नौरंग आदि गीत गाते हैं -

"डेडरियो करे डरूं - डरूं
पालर पानी भरूं - भरू
आधी रात री तलाई नेष्टेई नेष्टे"[2]

स्पष्ट है कि उक्त लोकगीत कलकत्ते के स्थानीय अंचल का बोध कराता है। साथ ही इस गीत के माध्यम से बारिश की कमी का भी परिचय मिलता है।

उपन्यास के नायक किशोरबाबू को ललित भैया की शादी में सुने एक मारवाड़ी गीत की पंक्तियाँ याद आती हैं -

"मेहंदी मोल की ऐ।
ऐ जी मेहंदी राची म्हारे हाथ,
म्हारो बन्नो बस्यो है दूर, सहेली
कुण निरखे म्हारा हाथ?"[3]

उपर्युक्त लोकगीत से विदित होता है कि मैंने खर्च करके हाथों में सुंदर मेहंदी लगवाई है लेकिन उस मेहंदी के हाथ को देखनेवाला वर तो दूर बसा हुआ है। इससे यह भी पता

---

1. सं. नवल जी - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृष्ठ - 1221
2. अलका सरावगी - कलि-कथा : बाइपास, पृष्ठ - 28
3. वही, पृष्ठ - 119

चलता है कि किशोर के मंझले मामा की शादी होकर कुछ ही दिन हुए हैं। मामी अपने माँ-बाप के पास रामगढ़ चली जाएगी और मामा कलकत्ते में रहेंगे। इसी कारण उपर्युक्त लोकगीत पंक्तियाँ सही प्रतीत होती हैं।

लोकगीत का समग्रालोचन करने के बाद कहा जा सकता है कि अलका सरावगी के 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में लोकगीत के माध्यम से बारिश की समस्या को चित्रित किया है। साथ ही पति-पत्नी में होनेवाला बिखराव भी चित्रित किया है।

6.1.2.4 **गालियों से युक्त भाषा का प्रयोग :-**

भाषा की वास्तविकता की पहचान तब होती है जब रचनाकार का भाषा पर अधिकार होता है। रचनाकार कभी-कभी अपनी रचना में पत्रों तथा वातावरण के अनुसार श्लील-अश्लील भाषा का प्रयोग करता है। अलका सरावगी के उपन्यासों में बड़े साहस से गालियों का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है। 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में भी गालियों का प्रयोग किया है। उपन्यास का नायक किशोरबाबू अपनी मामा की दुकान पर बैठता है तब वह मामा की सीखी हुई सब गालियाँ बकता है - "हरामजादा, साला, भैनचोद, सुअर का बच्चा का जाप कर लेता है।"[1] कहना आवश्यक नहीं कि लेखिका ने 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में गालियों का प्रयोग किया है।

अलका सरावगी के 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में भी गालियों का प्रयोग मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास बूढ़े उस्मान दर्जी के लड़के को लोग पिटते हुए गालियाँ देते हैं - "मुल्ला, कटवा, नमकहराम कहकर बेमतलब पीट और अधमरा कर सडक पर छोड़कर भाग गए।"[2] स्पष्ट है कि लेखिका ने गालियों का प्रयोग करते हुए भाषा को सहजता एवं सरलता के साथ प्रस्तुत किया है।

'कोई बात नहीं' उपन्यास में भी गालियों का प्रयोग कम मात्रा में क्यों न हो लेकिन अवश्य मिलता है। इस उपन्यास का शशांक और उसकी माँ वर्ड-बोर्ड पर लिखे 'नि' 'ना' का अर्थ सिर्फ वे दोनों ही जानते हैं - "निकम्मा, नालायक, नाकारा, नो गुड और निन्कॉमपूम यानी मूर्ख।"[3] उक्त उद्धरण से विदित होता है कि लेखिका गालियों के संक्षिप्त

---

1. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 115
2. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 193
3. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 154

रूपों का प्रयोग करती हुई भाषा को रसात्मकतापूर्ण बनाने की कोशिश करती हुई परिलक्षित होती है।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों में गालियों का प्रयोग खुलकर और बेबाकी के साथ प्रस्तुत किया है जो उपन्यास की कलात्मकता को हानि नहीं पहुँचाता। उपन्यासों में प्रयुक्त गालियाँ पात्रों एवं प्रसंगों के अनुरूप होने के कारण वे उपन्यास की गरिमा बढ़ाती हुई दिखाई देती है।

6.1.2.5 प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग :-

रचनाकार अपनी रचना को प्रभावशाली बनाने के लिए, सुग्राह्य बनाने के लिए, विचारों एवं भावों को अंकित करने के लिए, विषयवस्तु को बोधगम्य तथा सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग करता है। डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त के मतानुसार - ''प्रतीक के प्रयोग द्वारा लेखक अगणित भावों और विचारों को समेट लेता है, जो सामान्य भाषा द्वारा अभिव्यक्त नहीं हो सकता उसका निर्देशन करता है।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि प्रतीकों द्वारा लेखक भावों एवं विचारों को अभिव्यक्ति के साथ-साथ दिशानिर्देश का भी संकेत देता है। पाठक जब रचना के प्रतीकार्थ को जानता है तब उसे अपूर्व आनंद की प्राप्ति होती है। अलका सरावगी के विवेच्य उपन्यासों में प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग मिलता है।

'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास का 'बाइपास' शब्द मूल समस्या से बचकर दूसरा या बगल का रास्ता अपनाने का प्रतीक है। 'कलि-कथा' यह शब्द कलियुग की कथा का प्रतीक है जिसका माध्यम किशोरबाबू है। वह ऑपरेशन के बाद कलकत्ता शहर में चक्कर लगाता है। उसका यह चक्कर अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच का कोई विभाजन नहीं है। वह अपनी पुरखों की दुनियाँ में चला जाता है, फिर बचपन की दुनियाँ में, फिर बाइपास सर्जरी के पहले और बाइपास सर्जरी के बाद की दुनियाँ में चला जाता है। उसका यह 'कालचक्र' 'कलि-कथा' का ही प्रतीक है। प्रस्तुत उपन्यास के पात्र भी प्रतीकात्मक दिखाई देते हैं, जैसे - किशोरबाबू भारतीय पुरूषी मानसिकता तथा मारवाड़ी समाज का, शांतनु सुभाषबाबू के विचारों का तथा अमोलक गांधी जी के विचारों का आदि पात्र विभिन्न विचारधारा के प्रतीक हैं जो उपन्यास को प्रतीकात्मकता के साथ-साथ कलात्मकता प्रदान करते हैं।

---

1. डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त - उपन्यास : स्वरूप, संरचना तथा शिल्प, पृष्ठ - 164

अलका सरावगी के 'शेष कादम्बरी' उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक है। 'शेष कादम्बरी' उपन्यास के शीर्षक का प्रतीकार्थ है - 'आत्मकथा का शेष अब कादंबरी के हवाले' या 'अशेष काल की शेष कादम्बरी'। साथ ही मराठी का 'कादम्बरी' शब्द का प्रतीक है उपन्यास। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका रूबी दी सेवाभावी, उदार तथा पीड़ामय जीवन को भोगनेवाली भारतीय नारी का प्रतीक है। सार यह कि 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में प्रतीकों का प्रयोग कलात्मक परिलक्षित होता है।

'कोई बात नहीं' उपन्यास का शीर्षक भी प्रतीकात्मक है। 'कोई बात नहीं' उपन्यास के शीर्षक का प्रतीकार्थ है - 'हार न मानने की जिद और नए शुरुआत का नाम'। प्रस्तुत उपन्यास की दादी पिछड़ी हुई भारतीय स्त्री का प्रतीक है।

निष्कर्षत: कहना गलत नहीं होगा कि अलका सरावगी के उपन्यासों में प्रतीकात्मक भाषा का उचित निर्वाह हुआ है। ये प्रतीक एकांगी न होकर बहुअंगी प्रतीत होते हैं। विवेच्य उपन्यासों में प्रतीक, प्रतीकात्मक शीर्षक तथा प्रतीकात्मक चरित्रों की योजना दूवारा लेखिका अपने अभिप्रेत अर्थ को व्यंजित करता है। इन उपर्युक्त प्रतीकों के कारण विवेच्य उपन्यास कलात्मक परिलक्षित होते हैं।

6.1.2.6 साहित्यिक काव्यपंक्तियों का प्रयोग :-

रचनाकार कभी-कभी अपनी रचना को प्रभावशाली बनाने के लिए साहित्यिक काव्यपंक्तियों का प्रयोग करता है। अलका सरावगी ने भी अपने उपन्यासों में साहित्यिक पंक्तियों का प्रयोग किया है। जिसके कारण उपन्यासों में प्रभावात्मकता दिखाई देती है। अलका सरावगी के विवेच्य उपन्यासों में मध्यकालीन तथा आधुनिक कालीन कवियों के काव्यपंक्तियों का प्रयोग सहजता से किया हुआ परिलक्षित होता है, जैसे -

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।"[1]

- मैथिलीशरण गुप्त

---

1. अलका सरावगी -कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 58

"आओ क्रांति बलाएं ले लूं। अनाहूत आ गई भली।
वास करो मेरे घर-आंगन। विचरो मेरी गली-गली।"[1]

- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

"गेराम बेड़े अगाध पानी
ओ तार नाई किनारा
नाई तरनी
पारे"[2]

- लालन फकीर

"वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरू,
किरपा कर अपनायो।"[3]

-मीराबाई

"जैसे उड़ि जहाज को पंछी,
पुनि जहाज पर आवे।"[4]

- सूरदास

"जीवन और धरती आसन्न वसन्त का इन्तजार कर रहे हैं।
पर ऐ बुलबुल,
तुम यह टूटा हुआ पंख क्यों लिए हुए हो?"[5]

- द ब्रोकन विंग

"यह क्या है जो जूते में गड़ता है
यह कील कहाँ से रोज निकल आती है
इस दुख को रोज समझना क्यों पड़ता है..."[6]

"हम तो सारा-का-सा लेंगे जीवन
कम-से-कम वाली बात न हमसे कहिए।"[7]

---

1. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 96
2. वही, पृष्ठ - 132
3. वही, पृष्ठ - 141
4. वही, पृष्ठ - 1[illegible]0
5. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 85
6. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 39
7. वही, पृष्ठ - 41

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों में काव्यपंक्तियों का प्रयोग प्रभावात्मकता, आकर्षकता तथा कलात्मकता लाने के लिए किया है इसमें दो राय नहीं।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि अलका सरावगी के उपन्यासों में वैविध्यपूर्ण भाषा का प्रयोग कलात्मक परिलक्षित होता है। इन उपन्यासों में कहावतें, मुहावरे, लोकगीत, गालियों से युक्त भाषा, प्रतीकात्मक भाषा और साहित्यिक काव्यपंक्तियों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में हुआ है। विवेच्य उपन्यासों में भाषा का प्रयोग यथावश्यक, प्रसंगानुरूप तथा परिवेशानुकूल दिखाई देता है। साथ ही इन भाषा प्रयोग के कारण विवेच्य उपन्यासों में प्रभावात्मकता, आकर्षकता तथा कलात्मकता परिलक्षित होती है। लेखिका द्वारा भाषा के इन विभिन्न रूपों का प्रयोग उसकी कलात्मकता की कसौटी को अभिव्यक्ति देते हैं। विविध प्रयोगों के बावजूद भी भाषा प्रभावशाली एवं गरिमा से युक्त नजर आती है।

6.1.3 **विविध शैलियों का प्रयोग -**

मूलत: शैली मनुष्य के भावों और विचारों को वाणी देने का काम करती है। अंग्रेजी में शैली को 'Style' कहते हैं। शैली के द्वारा रचनाकार किसी विषय को यथातथ्य रूप में प्रस्तुत करता है। शैली रचनाकार के अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का साधन है। डॉ. गुलाबराय का कहना है कि "शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं, जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समाज रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।"[1] उक्त उद्धरण से समझने में देर नहीं लगती कि शैली में अंतरंग और बहिरंग का चित्रण प्रस्तुत किया जाता है। शैली रचनाकार के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है क्योंकि शैली के अभाव में रचना की प्रस्तुति संभव नहीं होती। प्रकृति सुंदर होने के कारण मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को सुंदरता से अंकित करता है। शैली इसी इच्छा की पूर्ति का साध्य नहीं बल्कि साधन है और अभिव्यक्ति का माध्यम भी।

हर इन्सान की अपनी अलग-अलग शैली होती है, जिसके कारण उनकी एक अलग पहचान भी बनती है। रचनाकार रचना का सृजन करते समय एक ही शैली को नहीं

---

1. डॉ. गुलाबराय - सिद्धांत और अध्याय, पृष्ठ - 180

अपनाता बल्कि विविध शैली को अपनाता है। फलत: रचना में प्रभावात्मकता, नवीनता तथा आकर्षकता आदि गुण दिखाई देते हैं। शैलियों के प्रकार में पूर्वदीप्ति, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, डायरी, स्वप्न, टेलीफोन, किस्सागोई और कुरियर आदि प्रमुख हैं जो अलका सरावगी के उपन्यासों में दिखाई देते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में उपर्युक्त सभी शैलियों का प्रयोग कम-अधिक मात्रा में किया हुआ दिखाई देता है। अब हम विवेच्य उपन्यासों में प्रयुक्त शैलियों का विवेचन-विश्लेषण करेंगे -

6.1.3.1 **पूर्वदीप्ति शैली :-**

प्रस्तुत शैली को अंग्रेजी में 'फ्लैशबॅक' शैली कहा जाता है। इस शैली में अतीत से जुड़ी घटनाओं का वर्णन किया जाता है। जीवन में घटित-घटनाओं का वर्णन स्मृति के सहारे प्रस्तुत किया जाता है। इसी संबंध में डॉ. तारा अग्रवाल ठीक ही लिखती हैं - ''अंग्रेजी साहित्य के सम्पर्क से विकसित इस शैली में भूतकाल, वर्तमानकाल और फिर भूतकाल की इस ढ़ंग से कथावस्तु विकसित होती है। वर्तमान जिन्दगी जीते हुए पात्र अपने विगत जीवन की घटना का उल्लेख जब करते हैं तब उसे 'पूर्वदीप्ति' या 'स्मृतिपरक' शैली कहा जाता है।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि अंग्रेजी साहित्य से निकटस्थ यह शैली वर्तमान जिंदगी जीते हुए अतीत की घटना के माध्यम से भविष्य का संकेत देती है। अतीत में जीता हुआ पात्र न केवल भावनाओं और विचारों को व्यक्त करता है बल्कि उस पर सोचता भी है और पुरानी यादों को याद भी करता है। अलका सरावगी के उपन्यासों में इसी शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में मिलता है।

अलका सरावगी के 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास का किशोरबाबू धर्मतल्ला के पास खड़ी विप्लवी रासबिहारी बोस की बड़ी-सी मूर्ति के माथे पर रंग का तिलक देखकर चकित होता है, जैसे - ''मैं बड़ा चकित हुआ। किसने लगाया होगा इतनी ऊँची मूर्ति के माथे पर तिलक? उस सफेद तिलक को देखकर, जानती हो मुझे किसकी याद आई? स्वामी रामानंद कृष्ण की। मैं एकाएक पचास साल से भी पीछे चला गया।''[2] स्पष्ट है कि उपर्युक्त उद्धरण में पूर्वदीप्ति शैली परिलक्षित होती है।

---

1. डॉ. तारा अग्रवाल - मृदुला गर्ग का कथा-साहित्य, पृष्ठ - 260
2. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 112

'शेष कादम्बरी' उपन्यास में पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास की रूबी दी को देवीदत्त मामा के इतिहास का वृत्तांत पढ़ने पर उसे याद आया कि "रूबी दी को देवीदत्त मामा के इतिहास का वृत्तान्त पढ़कर आज वह घटना फिर याद हो आई - ईश्वर जाने कि देवीदत्त मामा का वह आचरण गांधीवाद, मार्क्सवाद या उनके बाद के दिनों के लोहियावाद - न जाने किस आधार पर उचित था? या कि देवीदत्त मामा बरसों पीछे खोई हुई किसी रूबी को यह बताना चाह रहे थे कि अब भी वे वही करते हैं, जो उन्हें सिद्धान्ततः ठीक लगता है? रूबी दी इतना सब इतिहास पढ़ते-पढ़ते थक चली थीं - देश की राजनीति या इतिहास में हमेशा से उनकी इतनी ही दिलचस्पी रही थी कि चालू बहसों पर चार आदमियों के बीच बोलने लायक जानकारी भर रहे।"[1] कहना आवश्यक नहीं कि रूबी दी को देवीदत्त मामा का वृत्तांत पढ़ने पर आजादी के समय देवीदत्त मामा और गांधी जी के संबंध में जो बातें थीं वह बातें याद आती हैं।

'कोई बात नहीं' उपन्यास में भी पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास की दादी का यह कथन द्रष्टव्य है - "शायद। पता नहीं। अच्छा, बहुत हो गया। छोड़ ना अब इस पुराण को। हाँ, एक बात तो मुझे बहुत याद आती है। चीन से लड़ाई हुई न, तब नेहरू जी के लिए मैंने भी दो सोने की चुड़ियाँ भेजीं। देश के लिए उस समय लोग क्या नहीं दे रहे थे। सुनते हैं कि बहुत अमीरों ने तो अपने नौलखे हार तक नेहरू जी की झोली में डाल दिए देश को बचाने के लिए। मैंने तो बस दो चुडियाँ ..."[2] शशांक के दादी का यह कथन भारत-चीन युद्ध की याद दिलाता है।

निष्कर्षतः कहना गलत नहीं होगा कि अलका सरावगी के उपन्यासों में पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग अधिकांश मात्रा में और कलात्मकता के साथ अंकित हुआ है।

6.1.3.2 आत्मकथात्मक शैली :-

इस शैली को 'मैं' शैली भी कहा जाता है। रचनाकार एक पात्र के माध्यम से विषयवस्तु को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। लेखक की इसमें निवेदक की भूमिका रहती है। प्रथम पुरूष की ओर से कथा को प्रस्तुत किया जाता है। डॉ. प्रतापनारायण टंडन के शब्दों

---

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 99
2. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 58

में - ''उत्तम पुरूष अथवा प्रथम पुरूष की ओर से जो कथा प्रस्तुत की जाती है उसे हम 'आत्मकथात्मक शैली' के अंतर्गत रखते हैं।''[1] कहना सही होगा कि इस शैली में प्रथम पुरूष अर्थात् 'मैं' के जरिए विषयवस्तु को प्रस्तुति दी जाती है। उपन्यासकार नायक तथा नायिका का स्थान ग्रहण कर अपनी विषयवस्तु में होनेवाली हर घटना का चित्र प्रस्तुत करता है। विवेच्य उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग अधिकांश मात्रा में दृष्टिगोचर होता है।

'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास के हैमिल्टन साहब का कथन द्रष्टव्य है - ''मैं तुम्हें अपने बारे में एक ऐसी बात बताना चाहता हूँ, जो मेरे और मेरी माँ के सिवाय, जो इंग्लैंड में है, कोई नहीं जानता। किसी को जानने का हक भी नहीं, पर मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ। क्या मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूँ?''[2] स्पष्ट है कि हैमिल्टन साहब का यह कथन आत्मकथात्मक शैली का परिचय देता है।

अलका सरावगी के 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली का चित्रण अधिकांश मात्रा में मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास की कादम्बरी अपनी नानी रूबी दी से कहती है - ''मैं ओबिचुअरी लिख रही हूँ, नानी। . . . . मैं बाड़मेर के सूखाग्रस्त इलाके से लौटी हूँ, नानी। उसकी रिपोर्ट लिख रही हूँ, तो लगता है, इस देश की ओबिचुअरी लिख रही हूँ।''[3] कादंबरी का उक्त कथन आत्मकथात्मक शैली को प्रस्तुत करता है इसमें संदेह नहीं।

'कोई बात नहीं' उपन्यास में भी आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग बड़ी कुशलता से किया हुआ है। इसी उपन्यास की दादी का यह कथन आत्मकथात्मक शैली का उदाहरण है, जैसे - ''अरे नहीं बेटा, न मैं खुद जा सकती थी और न तेरे दादाजी को दे आने के लिए कह सकती थी। व्यापारी आदमी को देश के लिए सोने का दान समझ में क्या जाने आता कि नहीं। मैंने तो अपनी एक पड़ोसन सहेली के हाथों गुपचुप भिजवा दीं। उसने बड़ी शान से डालीं झोली में - जैसे खुद दे रही हो। मैंने छुपकर ऊपर बरामदे से देखा। वह बड़ी देशभगत थी। लालबहादुर शास्त्री के कहने पर जो सप्ताह में एक सोमवार को अनाज खाना छोड़ा, तो आज तक चला रही है। तीस बरस से ज्यादा हो गए।''[4]

---

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास कला, पृष्ठ - 267
2. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 44
3. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 34
4. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 58

निष्कर्ष यह कि अलका सरावगी के उपन्यासों में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। लेखिका ने प्रस्तुत शैली का प्रयोग विवेच्य उपन्यासों में कलात्मकता के साथ रेखांकित किया है ।

6.1.3.3 **पत्रात्मक शैली :-**

मूलत: विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए इस शैली का उपयोग किया जाता है। जब एक व्यक्ति अपना लिखित संदेश दूसरे व्यक्ति के पास भेजता है तब उसे पत्र कहा जाता है। जब लेखक इन पत्रों का प्रयोग अपनी रचनाओं में करता है तब उसे पत्रात्मक शैली कहते हैं। पत्रात्मक शैली का प्रयोग कथावस्तु को गति देने के साथ-साथ रचनाकार के कथ्य को सुगम बनाने के लिए तथा औपन्यासिक पात्रों को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। साथ ही व्यक्ति जों बातें प्रत्यक्ष कहने में संकोच होता है वहीं बातें पत्र के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त पत्रशैली के बारे में लिखते हैं - ''घटनाओं के सूक्ष्म ब्यौरे, व्यक्तियों के बीच होनेवाली बातचीत और उस बातचीत के समय प्रकट किये गये मनोभावों के चित्र बड़ी आत्मीय शैली में प्रस्तुत किये जाते हैं क्योंकि पत्र लेखक लिखते समय उस क्षण को प्रत्यक्ष अपने सम्मुख देखता है, अन्तरंग व्यक्ति को पत्र लिखने के कारण उसमें दुराव-छिपाव न होकर सब कुछ नि:संकोच एवं आत्मीय ढंग से कहने की प्रवृत्ति होती है।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि पत्रात्मक शैली के जरिए रचनाकार अपने मनोभावों को नि:संकोच तथा आत्मीय ढंग से प्रकट करता है। विवेच्य उपन्यासों में पत्रात्मक शैली का प्रयोग कम मात्रा में क्यों न हो लेकिन अवश्य मिलता है।

'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में किशोरबाबू को शांतनु दूवारा भेजा हुआ पत्र का नमुना द्रष्टव्य है - ''आम के बगीचों, पास बहती गंगा और 'रवि शस्य' के खेतों के बीच लग रहा है कि स्वर्ग में आ गया हूँ। 'सोनार बांग्ला' देखना हो, तो सारे बंधन तोड़कर भागकर चले आओ। ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा। अमोलक वर्धा से लौटकर यहाँ आएगा, ऐसा उसने लिखा है। हमारी तिकड़ी खूब जमेगी। तुम दोनों के लिए एक अनोखा उपहार भी यहाँ तुम्हारा इंतजार कर रहा है। लेकिन उसे रहस्य ही रहने दो। बस इतना दावे के साथ कह सकता हूँ कि जब यहाँ से कलकत्ता लौटोगे तो जीवन वैसा नहीं रहेगा, जैसा है।''[2] उपर्युक्त उद्धरण पत्रात्मक शैली का परिचय देता है।

---

1. डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त - उपन्यास : स्वरूप, संरचना तथा शिल्प, पृष्ठ - 139-140
2. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 122

अलका सरावगी ने 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में 'पत्रात्मक शैली' का प्रयोग किया है। प्रस्तुत उपन्यास की कादम्बरी अपनी नानी रूबी दी को पत्र में लिखती है -

''मेरी अपनी नानी, ...

प्यारी जो प्यार देती है . . . .

. . . . इसे सत्य की ओर बढ़ाओ -

तुम्हारी

कादम्बरी''[1]

कहना आवश्यक नहीं कि 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में पत्रात्मक शैली का उपयोग किया है।

'कोई बात नहीं' उपन्यास में पत्रात्मक शैली का प्रयोग मिलता है। इसी उपन्यास में शशांक की माँ ने शशांक के टिचर मिस्टर जोसेफ को लिखा यह पत्र यहाँ प्रस्तुत है-

''डियर मिस्टर जोसेफ,

मैं जानती हूँ कि आप . . . .

. . . . हमारे पास क्या चारा है?

शुभकामनाओं सहित,

मिसेज चौधरी''[2]

कहना आवश्यक नहीं कि उक्त पत्र, पत्रात्मक शैली का उदाहरण है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अलका सरावगी के उपन्यासों में पत्रात्मक शैली का प्रयोग प्रसंगानुरूप हुआ है जो उपन्यास की कलात्मकता सिद्ध किए बिना नहीं रहता।

6.1.3.4 डायरी शैली :-

कथावस्तु में एक पात्र, दो पात्र तथा दो से अधिक पात्रों की डायरी या डायरी के कुछ अंशों को रचना में यथायोग्य प्रस्तुत किया जाता है तब उसे डायरी शैली कहा जाता है।

---

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 162-163
2. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 169

डायरी शैली के माध्यम से महत्त्वपूर्ण घटना एवं प्रसंग को उठाया जाता है। डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त के शब्दों में - ''डायरी शैली में लिखे उपन्यासों में भी लगभग वही विशेषताएँ होती है जो पत्रात्मक शैली में लिखे उपन्यास में, पर उसमें विस्तार की संभावना अपेक्षाकृत अधिक होती है। डायरी शैली में भी कथा की श्रृंखला को निर्बंध बनाये रखना कठिन होता है क्योंकि डायरी में जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं, परिस्थिति विशेष में मानस में उठानेवाली भावगर्मियों और अन्त:संघर्ष का ही चित्रण होता है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि डायरी शैली में महत्त्वपूर्ण घटना या परिस्थिति के साथ-साथ मानव मन में उठनेवाली भावगर्मियों का भी चित्रण होता है। अलका सरावगी के उपन्यासों में डायरी शैली का प्रयोग उचित जगह हुआ है।

'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में चित्रित डायरी शैली का उदाहरण द्रष्टव्य है - ''डायरेक्ट एक्शन डे - 16 अगस्त 1946 का दिन अमोलक के मरण का दिन नहीं बना, यह अद्‌भुत शब्द के अद्‌भुततम अर्थ में ही संभव हुआ था। क्या सचमुच करनेवाले की तिथि और धरती दोनों पहले से ही निश्चित होती है? कहते हैं कि धरती उठकर नहीं आती आदमी ही मरने की जगह पर उठकर जाता है।''[2] प्रस्तुत अवतरण डायरी शैली का परिचय देता है। इस संदर्भ में प्रो. गोपालराय कहते हैं - ''किशोर बाबू की डायरी का उपयोग करके सरावगी ने अपने कथाशिल्प को चमत्कारपूर्ण ही नहीं, कथ्य के लिए आवश्यक भी बना दिया है।''[3] स्पष्ट है कि लेखिका ने किशोरबाबू की डायरी का उपयोग करके कथाशिल्प को चमत्कारपूर्ण बना दिया है।

'शेष कादम्बरी' उपन्यास की रूबी दी अपनी डायरी में सविता का नाम खोजकर उसकी पिछली रिकार्ड की बातें पढ़ती हैं - ''कॉलेज से एक दिन लौटने पर माँ की लाश पलंग के नीचे। सविता और उसका बड़ा भाई एक घंटे तक घंटी बजाकर पिछले दरवाजे से घुसे। ग्राऊंड फ्लोअर का फ्लैट। सन्देह पुराने नौकर पर पकडा नहीं गया। छह महीने बाद भाई की शादी। उसके आठ महीने बाद पिता दूसरी शादी कर दूसरी जगह चले गए। तब स. की उम्र 20 वर्ष। भाई 21 वर्ष।''[4] यह वह अंश है जो रूबी दी ने सविता के बारे में अपनी डायरी में लिखा था। स्पष्ट है कि लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास में डायरी शैली का भी उपयोग किया है।

---

1. डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त - उपन्यास : स्वरूप, संरचना तथा शिल्प, पृष्ठ - 140
2. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 164
3. प्रो. गोपालराय - हिंदी उपन्यास का इतिहास, पृष्ठ - 397
4. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 9

अलका सरावगी के 'कोई बात नहीं' उपन्यास में डायरी शैली का प्रयोग किया है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक शशांक अपनी माँ की डायरी में लिखी बाते पढ़ता है - ''जिस दिन अदिति ने चलना शुरू किया था, उसी दिन मैंने भगवान को उसकी नाइंसाफी के लिए माफ कर दिया। उस दिन से मैंने दुनिया के सारे चलते हुए बच्चों - यहाँ तक कि सड़क के भिखारियों के बच्चों से भी जलना-कुढ़ना छोड़ दिया। अपनी तकलीफ आदमी को कितना ओछा बना देती है। अदिति के चलने से पहले दुनियां मुझे अपनी दुश्मन लगती थी।''[1] उक्त उद्‌धरण में डायरी शैली परिलक्षित होती है।

अत: कहा जा सकता है कि विवेच्य उपन्यासों में डायरी शैली का उपयोग यथावश्यक किया है। विवेच्य उपन्यासों की कलात्मकता बढ़ानेवाली यह एक महत्त्वपूर्ण शैली है।

6.1.3.5 **स्वप्न शैली :-**

रचनाकार अपनी रचना में किसी पात्र की स्वप्नावस्था की घटनाओं को विषयवस्तु में अंकित करता है तब उसे स्वप्नशैली कहते हैं। मनुष्य की भावना, इच्छा, कुंठा और दमित वासना को वाणी देने के लिए रचनाकार स्वप्न शैली को प्रस्तुत करता है। अलका सरावगी के उपन्यासों में स्वप्न शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है।

'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने स्वप्न शैली को प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत उपन्यास में किशोर बाबू ने देखा स्वप्न, स्वप्न शैली का उदाहरण है, जैसे - ''इन दिनों वह रात-रात सपने देखता है। कई बार उसे सपने में ऐसा महसूस होता है .... तभी उसकी नींद इसी परेशानी में खुल जाती है और वह देर तक जागता हुआ परेशान रहता है।''[2] कहना आवश्यक नहीं कि उपर्युक्त उद्‌धरण में स्वप्न शैली लक्षित होती है।

अलका सरावगी ने 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में भी स्वप्न शैली का उपयोग किया है। इसी उपन्यास की नायिका रूबी दी नींद से ऊठकर सपने में देखी बातें अपने पिता से बताती है - ''पता है पिताजी, अभी मैंने एक कितना भयंकर सपना देखा! हमारा मकान कैसा

---

1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 206
2. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 72-73

खंडहर जैसा हो गया और हमारा 'वीपिंग विलो' का पेड़ चारो तरफ उग आए जंगल के बीच खड़ा-खड़ा सचमुच रो रहा था।''[1] स्पष्ट है कि रूबी दी का यह सपना, स्वप्न शैली का परिचय देता है।

'कोई बात नहीं' उपन्यास में स्वप्न शैली का प्रयोग अधिकांश मात्रा में मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास की दादी का स्वप्न यहाँ द्रष्टव्य है - ''मुझे कल रात जो सुपना आया, उसका मतलब कुछ और भी हो सकता है। हो सकता है कि मैं जो अर्थ निकल रही हूँ, वह मेरा भरम ही हो। पर ऊपरवाले की कृपा हो, तो मेरा अर्थ ही सच निकलेगा।''[2] कहना आवश्यक नहीं उक्त अवतरण स्वप्न शैली का परिलक्षित होता है। इसी उपन्यास का एक अध्याय ही स्वप्न शैली का उदाहरण है, जैसे - ''ओ गॉड, यह कैसा भयानक सपना है।''[3]

निष्कर्षत: कहना गलत नहीं होगा कि विवेच्य उपन्यासों में स्वप्न शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। लेखिका ने इस शैली में पात्रों के माध्यम से हर तरह के स्वप्नों को देखा है। लेकिन ये स्वप्न पात्रों की नींद खो जाने पर स्वप्न ही रह जाते हैं। पात्र स्वप्न में अपनी समस्या का समाधान भी करते हैं लेकिन नींद खुल जाने पर यह समस्या वही की वही रह जाती है। अत: कहना होगा कि लेखिका ने विवेच्य उपन्यासों में स्वप्न शैली का प्रयोग कलात्मकता से अंकित किया है।

6.1.3.6 **टेलीफोन शैली :-**

लेखक अपनी रचना में विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए टेलीफोन का सहारा लेता है तब उस शैली को टेलीफोन शैली कहा जाता है। 'कलि-कथा : वाया बाइपास' तथा 'कोई बात नहीं' उपन्यास में टेलीफोन शैली का प्रयोग कम मात्रा में हुआ है और 'शेष कादम्बरी' में टेलीफोन शैली की भरमार नजर आती है।

'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में कम मात्रा में क्यों न हो लेकिन टेलीफोन शैली का प्रयोग अवश्य मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक किशोरबाबू अपने बेटे से पूछता है - ''किससे बातें कर रहे थे फोनपर अभी''[4] उक्त कथन से विदित होता है कि किशोरबाबू के बेटे ने फोन किया था, जो टेलीफोन शैली का परिचायक है।

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 16
2. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 162
3. वही, पृष्ठ - 124-125
4. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 139

अलका सरावगी के 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में टेलीफोन शैली का प्रयोग अधिकांश मात्रा में किया है। प्रस्तुत उपन्यास में 26 अध्याय हैं उनमें से 7 अध्यायों में टेलीफोन शैली का प्रयोग हुआ है - "एस.टी.डी. कलकत्ता से दिल्ली-I"[1] अध्याय में टेलीफोन शैली का परिचय मिलता है। इसी उपन्यास की नायिका रूबी दी अपनी नातिन कादम्बरी से फोन करती है - "011-6423235 हलो, कादम्बरी। क्या कर रही हो आजकल?"[2] कहना सही होगा कि उक्त कथन टेलीफोन शैली का है।

'कोई बात नहीं' उपन्यास में भी टेलीफोन शैली का प्रयोग कम मात्रा में क्यों न हो लेकिन अवश्य मिलता है। 'कोई बात नहीं' उपन्यास में शशांक की माँ किसी को फोन पर बताती है - "अब शशांक अपने सारे काम खुद कर सकता है - नहाना-धोना, खाना-पीना, कपड़े पहनना वगैरह-वगैरह। वह दीवारें और फर्नीचर पकड़कर इधर-से-उधर जा सकता है।"[3] शशांक की माँ टेलीफोन पर शशांक की हुई प्रगती के बारे में बताती है।

सार यह कि अलका सरावगी के उपन्यासों में टेलीफोन शैली का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। 'कलि-कथा : वाया बाइपास' तथा 'कोई बात नहीं' उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग कम मात्रा में क्यों न हो लेकिन अवश्य मिलता है लेकिन 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में इस शैली की भरमार नजर आती है। अत: स्पष्ट है कि टेलीफोन शैली के कारण विवेच्य उपन्यासों में कलात्मकता आई है।

6.1.3.7 **किस्सागोई शैली :-**

किस्सागोई शैली के माध्यम से लेखिका पाठक का मनोरंजन और हौसला बढ़ाने का काम करती है। इस शैली के कारण उपन्यास में पठनीयता भी आती है। अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों में किस्सागोई शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में किया है। अलका जी के 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में किस्सागोई शैली का प्रयोग अधिकांश मात्रा में मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक किशोरबाबू अपनी पत्नी से हार्ट आपरेशन में उसकी देखभाल करनेवाली नर्स का किस्सा बता देता है - "तुम्हें एक किस्सा बताऊं .... मैंने उसकी माँ को मिठाई का डिब्बा दिया और उलटे पैरों लौट आया।"[4]

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 12-13
2. वही,पृष्ठ - 20
3. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 218
4. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 139

कहना आवश्यक नहीं कि अलका सरावगी ने प्रस्तुत उपन्यास में किस्सागोई शैली का प्रयोग किया है। इसी शैली के संदर्भ में डॉ. मंजुरानी सिंह लिखती हैं - "अलका सरावगी की कहानियों की तुलना में इस उपन्यास में किस्सागोई का भरपूर निर्वाह हुआ है।"[1] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों में किस्सागोई शैली का प्रयोग किया है।

'शेष कादम्बरी' उपन्यास में किस्सागोई शैली का प्रयोग दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास की रूबी दी बोथरा जी की पत्नी का किस्सा बताती है, जैसे - "रूबी दी ने आभा जैन को बोथरा जी की पत्नी का किस्सा बताने के लिए मुँह खोला . . . . जैसा कि कभी किसी से सुना था!"[2] उक्त कथन से विदित होता है कि 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में किस्सागोई शैली का प्रयोग परिलक्षित होता है।

अलका सरावगी के 'कोई बात नहीं' उपन्यास में किस्सागोई शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में परिलक्षित होता है। प्रस्तुत उपन्यास में शशांक की माँ अपने पति से कहती है - "आपने वह चुटकुला सुना है? एक आदमी दो उल्लू बेच रहा था - बड़े उल्लू का दाम पचास रूपया, छोटे उल्लू का सौ रूपया। एक खरीददार ने कहा - 'भई, यह तो उलटी बात है। छोटे उल्लू का दाम डबल क्यों?' 'अरे साब' - उसने जवाब दिया 'बड़ा उल्लू तो सिर्फ उल्लू है, छोटा उल्लू तो उल्लू भी है और उल्लू का पट्ठा भी'।"[3] कहना आवश्यक नहीं कि उक्त चुटकुला किस्सागोई शैली का उदाहरण है।

निष्कर्षत: कहना होगा कि अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों में किस्सागोई शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है।

6.1.3.8 **कुरियर शैली :-**

कुरियर शैली पत्रात्मक शैली का अगला कदम है। अलका सरावगी के 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में कुरियर शैली का प्रयोग दो अध्यायों में किया है। प्रस्तुत उपन्यास की कादंबरी रूबी दी को अपने प्रोजेक्ट की रिपोर्ट कुरियर दूवारा भेजती है, जिसका नाम है - "एक अदृश्य आदमी"[4]। यह शैली कुरियर शैली मानी जा सकती है। इसी रिपोर्ट का बाकी हिस्सा

---

1. सं. गोविंद मिश्र - अक्षरा, त्रैमासिकी, जुलाई-सितंबर, 1999, पृष्ठ - 104
2. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 39
3. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 197
4. अलका सरावगी - शंष कादम्बरी, पृष्ठ - 93

वह 'स्पीड पोस्ट' से नहीं तो 'कुरियर' से भेजती है जिस रिपोर्ट का नाम है - "एक शताब्दी की खोज : वाया एक अदद आदमी"[1] । स्पष्ट है कि लेखिका ने यहाँ कुरियर शैली का प्रयोग किया है। अत: कहना सही होगा कि अलका सरावगी ने 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में कुरियर शैली का प्रयोग किया है। प्रस्तुत रचना में शैली की दृष्टि से यह एक नया प्रयोग हुआ है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि अलका सरावगी के उपन्यासों में शैलीगत वैविध्यपूर्ण प्रयोग लेखिका की अभिव्यक्ति क्षमता का परिचायक है। उनके उपन्यासों में पूर्वदीप्ति शैली, आत्मकथात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, डायरी शैली, स्वप्न शैली, टेलीफोन शैली, किस्सागोई शैली और कुरियर शैली आदि शैलियों का प्रयोग कलात्मकता से परिलक्षित होता है। उनकी पूर्वदीप्ति शैली पाठकों को विचार करने के लिए बाध्य करती है। अलका सरावगी की औपन्यासिक रचनाओं में शैलीगत भिन्नता अवश्य दिखाई देती है लेकिन शैलीगत वैविध्य के बावजूद भी रचनाओं में गरिमा में कोई अंतर नहीं आता। अपितु विभिन्न शैलियों के प्रयोग के कारण वे रचनाएं अपना नया कलेवर प्रस्तुत करती हैं।

6.2 उद्देश्य-सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन :

वस्तुत: किसी भी रचनाकार का अपनी रचना के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य दिखाई देता है। हिंदी उपन्यासों के इतिहास को परखने के पश्चात् पता चलता है कि एक विशिष्ट काल में साहित्य सिर्फ मनोरंजन का साधन था लेकिन आज आधुनिक कालीन उपन्यासों को समीक्षात्मक दृष्टि से देखने के बाद पता चलता है कि यह उपन्यास निश्चय ही समाज को सही दिशा-निर्देश करनेवाले हैं। आधुनिक कालीन उपन्यासकार जिस तरह अपने परिवेश और समय के साथ जुड़ गया है उसी तरह उसकी साहित्यकृति उतनी ही समाजहित के साथ जुड़ी हुई दिखाई देती है।

समाज में अनेक सामाजिक समस्याएँ होती हैं। उपन्यासकार उन अनेक समस्याओं में से कुछ समस्याओं के साथ तादात्म्य स्थापित करके उन समस्याओं को अपनी रचना का अंग बनाते हैं। रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से समाजहित के लिए अनेक उद्देश्यों की पूर्ति करता है। आधुनिक कालीन उपन्यासकारों की यह विशेषता रही है कि

---

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 171

उनका हर उद्‌देश्य समाजहित के साथ जुड़ा हुआ है। आधुनिक काल के अनेक उपन्यासकारों में और खासकर महिला उपन्यासकारों में अनेक उद्‌देश्यों को अपनी रचना में समेटकर, उन्हें न्याय देने का प्रयास करनेवाली लेखिकाओं में अलका सरावगी का नाम शीर्षस्थ है। अलका सरावगी ने अपनी रचना में जिन उद्‌देश्यों को सामने रखा उनका चित्रण यहाँ प्रस्तुत है -

'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने सन् 1947 की स्वातंत्र्य गाथा केंद्र में रखते हुए स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तरकालीन ऐतिहासिक घटनाओं का परामर्श लेना, स्वदेश प्रेम जगाना, राष्ट्रीय एवं सामाजिक उत्थान और पतन को रेखांकित करना, स्वाधीनतापूर्व भारत तथा स्वाधीनता प्राप्ति के बाद के भारत के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय स्थिति का अंकन करना, अंग्रेजों की नीति तथा भारतीय लोगों की क्रांति को चित्रित करना आदि प्रधान उद्‌देश्यों को प्रस्तुत किया है। साथ ही देश की आजादी, गांधी जी की हत्या, सांप्रदायिक माहौल तथा बाबरी मस्जिद ध्वंस, प्लासी की लड़ाई का चित्रण आदि ऐतिहासिक दस्तावेज पाठकों के सामने रखना भी प्रस्तुत उपन्यास का उद्‌देश्य रहा है। किशोरबाबू के माध्यम से लेखिका ने भारतीय समाज की पुरूषी मानसिकता, एकाधिकारशाही, शिक्षा-संबंधी मान्यता तथा विधवा विवाह विषयक मान्यता आदि उद्‌देश्यों को उजागर किया है। प्रस्तुत उपन्यास के उद्‌देश्य में वैविध्य नजर आता है, जैसे - नारी-स्वतंत्रता, समन्वय की वृत्ति, सामाजिक उन्नयन की कामना, अकाल की समस्या, धर्मांधता, सांप्रदायिकता, स्वार्थांधता, विधवा-विवाह का विरोध, नारी का अकेलापन, अंधविश्वास, पारंपरिक दृष्टिकोण, अवैध यौन संबंध, हिंदू-मुस्लिम आपसी बैर, मारवाड़ी जाति का पिछड़ापन, मारवाड़ी नारियों की हालत, बीमारी, जन्मभूमि से लगाव और कायरता आदि तत्वों को त्यागकर मनुष्य ने अपना विकास करने की प्रेरणा देना आदि। अत: कहना सही होगा कि उपर्युक्त सभी उद्‌देश्य प्रसंगानुरूप प्रस्तुत करने में लेखिका सफल रही है।

'शेष कादम्बरी' उपन्यास का रूबी दी के माध्यम से स्त्रियों की पीड़ा, दर्द तथा वेदना को चित्रित कर नारी-स्वतंत्रता की माँग करना प्रधान उद्‌देश्य रहा है। साथ ही स्त्री-जीवन के नए अर्थ की तलाश, स्त्री-अस्तित्व, आत्महत्या से बचना, निर्वासन की समस्या,

राष्ट्र-राज्य के असफलता के दृश्य, तत्कालीन समाज का नैतिक पतन, अकाल के कारण हुई लोगों की दयनीय स्थिति को चित्रित करना, वेश्याओं के उन्नति के लिए उसे उसके अधिकार दिलवाना, लड़का तथा लड़की में भेद न करना, लोकतंत्र के अंदर फैले राजतंत्र का पर्दाफाश करना, इंडस्ट्रियों की स्थिति तथा उसमें काम करनेवाले मजदूर की स्थिति, पुरूषों की स्त्री को देह समझने की मानसिकता में परिवर्तन लाना आदि उद्देशों की पूर्ति की पहल की हुई दिखाई देती है। नारी पीड़ा, त्रासदी, अकेलापन, दु:ख, उन पर होनेवाला अन्याय-अत्याचार तथा शोषण आदि का दस्तावेज प्रस्तुत उपन्यास देता है। साथ ही पारिवारिक तथा सामाजिक हिंसा की शिकार हुई नवयुवतियों की उलझनों को सुलझाना, उनमें आत्मविश्वास जगाना, उपेक्षिता, उत्पीड़िता स्त्री को न्याय तथा समानाधिकार दिलाना आदि का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में दृष्टिगोचर है। लेखिका ने रूबी दी जैसे प्रधान नारी पात्र के माध्यम से भयावह अकेलापन से दूर रहकर आत्महत्या के विरूद्ध खड़ा होना तथा भारतीय नारी की उदारता आदि उद्देश्य की कलात्मक प्रतीती की है। अत: कहना सही होगा कि 'शेष कादम्बरी' उपन्यास उद्देश्य की दृष्टि से कलात्मक है इसमें संदेह नहीं ।

'कोई बात नहीं' उपन्यास में लेखिका ने अनेक उद्देश्यों को पाठकों के सामने रखा है। प्रस्तुत उपन्यास के शशांक के जरिए हार न मानने की वृत्ति तथा मनुष्य जीवन की जिजीविषा को प्रस्तुत किया है। 'कोई बात नहीं' उपन्यास के उद्देश्य में वैविध्य नजर आता है, जैसे - संसार में जीवन जीते समय विश्वबंधुत्व की कामना करना, जातिप्रथा तथा भेदभाव को मिटाना, नारी को कैदी जीवन से मुक्ति दिलाना, स्वदेश प्रेम जागृत करना, आदमी को हिंसा की मार्ग से अहिंसा के मार्ग पर लाना और नारी की स्थिति-गति के साथ-साथ उसके मुक्ति की माँग करना आदि। इन उद्देश्यों के बावजूद एंग्लो-इंडियन लोगों की सामाजिक स्थिति, उनकी पीड़ा, उनकी समस्या, भारतीय न्यायव्यवस्था की समय पर न्याय न देने की वृत्ति, भेदभाव को मिटाना और महानगर की नारकीय जीवन का परिचय देना आदि उद्देश्यों की पूर्ति प्रस्तुत उपन्यास करता है।

'कोई बात नहीं' उपन्यास का नायक शशांक के माध्यम से प्रतियोगिता जीवन का मूल्य समझकर, दु:ख तथा वेदना को सहकर सहयोग के बल पर सुंदर और सम्मानपूर्ण

जीवन जीने की आकांक्षा करना लेखिका का महत् प्रयास रहा है। अत: कहना गलत नहीं होगा कि प्रस्तुत उपन्यास उद्देश्य की दृष्टि से कलात्मक है।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि विवेच्य उपन्यासों के माध्यम से आजादी के समय का चित्रण प्रस्तुत करना, आजादी के पहले और बाद का चित्रण प्रस्तुत करना, मारवाड़ी समाज का चित्रण करना, नारी की पीड़ा, दर्द, व्यथा, त्रासदी, अकेलापन, शोषण और उन पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार को चित्रित कर नारी-मुक्ति की कामना की है। इन्सान ने हार न मानना, मनुष्य को जीवन जीने की प्रेरणा देना तथा स्वदेश प्रेम जगाना आदि प्रधान उद्देश्यों को लेखिका ने कलात्मकता के साथ अंकित किया है।

6.3 समन्वित निष्कर्ष :

अलका सरावगी के उपन्यासों की भाषाशैली एवं उद्देश्य सृष्टि का कलात्मक मूल्यांकन करने के उपरांत जो तथ्य सामने आए हैं, वे इस प्रकार हैं -

अलका सरावगी के उपन्यासों में संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी तथा फारसी शब्दों का प्रयोग मिलता है, जिसके कारण विवेच्य उपन्यासों की भाषा स्वाभाविक, सरल, सहज, सशक्त, सफल तथा कलात्मक परिलक्षित होती है। भाषा के विविध प्रयोग विवेच्य उपन्यासों में दिखाई देते हैं। कहावतें, मुहावरे, लोकगीत, गालियाँ, प्रतीकात्मकता तथा साहित्यिक काव्यपंक्तियों का प्रयोग पात्रानुकूल, परिवेशानुकूल तथा यथार्थसंगत किया है, जिसके कारण विवेच्य उपन्यासों में प्रभावात्मकता तथा कलात्मकता दृष्टिगत होती है।

अलका सरावगी की उपन्यासों के शैली में वैविध्य नजर आता है। उनके उपन्यासों में पूर्वदीप्ति, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, डायरी, स्वप्न, टेलीफोन, किस्सागोई और कुरियर आदि शैलियों का प्रयोग कलात्मक लक्षित होता है। अत: कहना सही होगा कि लेखिका ने भाषाशैली का यथास्थान, यथावश्यक तथा यथायोग्य प्रयोग कर भाषा पर अपना अधिकार दिखा दिया है।

अलका सरावगी की भाषा में कलापक्ष का सामर्थ्य तथा अनुभवों का संप्रेषण भी परिलक्षित होता है। विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त शैलियाँ पाठकों को संबंधित विषय पर

विचार करने के लिए बाध्य करती है। विवेच्य उपन्यासों के शैली में प्राप्त शैलीगत वैविध्य लेखिका की अभिव्यक्ति क्षमता का परिचायक है।

अलका सरावगी के उपन्यासों की भाषा शैली की सभी विशेषताएँ समृद्ध तथा विस्तृत ज्ञान का परिचायक तो है ही, लेकिन कलात्मक भी है इसमें संदेह नहीं। अलका सरावगी के उपन्यासों में मारवाड़ी समाज के चित्रण के साथ-साथ आजादी के काल की स्थिति-गति चित्रित कर दिशा निर्देश का भी संकेत दिया है। साथ ही जीवन में आई हुई समस्या को सुलझाने के लिए 'बाइपास'का मार्ग अपनाने का संदेश देना औपन्यासिक कलात्मकता का परिचायक है। नारी की पीड़ा, दर्द, व्यथा, दु:ख, त्रासदी, अकेलापन और अन्याय-अत्याचार को चित्रित कर नारी-मुक्ति की पूरजोर हिमायत करना विवेच्य उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। विवेच्य उपन्यास जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं, स्वदेश प्रेम जगाते हैं साथ ही अनेक प्रधान तथा गौण उद्देश्यों की पूर्ति भी कराते हैं।

अंतत: कहना सही होगा कि विवेच्य उपन्यासों की भाषा शैली तथा उद्देश्य, कलात्मकता के परिचायक तो है ही, अपितु पथ-भ्रष्ट समाज एवं युवापीढ़ी को पथ-दर्शक तथा प्रेरणादायी भी सिद्ध होते हैं इसमें संदेह नहीं।

****